Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.5442, Volume 08, No. 02, April, 2018, pp. 453-456

उच्च शिक्षण संस्थाओं में ग्रन्थालय प्रयोगकर्ताओं के मतों का अध्ययन

डॉ. शिखा पालीवाल*

परिचय

ज्ञान प्राप्ति के अनेक साधन है– अध्ययन, मनन,प्रयोग,पर्यटन इनमें से पुस्तकों द्वारा ज्ञान प्राप्त करना ज्यादा सरल व सहज है। हजारों वर्षों से संचित अनुभवों का सम्प्रेषण पुस्तकों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है इस मंगलमय उद्देश्य की पूर्ति पुस्तकालयों द्वारा ही संभव है। पुस्तकालय विद्यालय संस्था की प्रत्येक शाखा की सेवा करता है । भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन की दृष्टि में हम पुस्कालय के द्वारा ही साहित्यिक जीवन की ओर बढ़ते हैं। पुस्तकालय लोक शिक्षा की सजीव शक्ति हैं जिसके द्वारा आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, दृष्टि को रखते हुए पुस्तकालय को त्रिमुखी साधन माना गया है जो कि पुस्तकों, पाठकों, कर्मचारियों का समन्वय है नई शिक्षा नीति 1986 में कुल बजट का 6 प्रतिशत शिक्षा पर एवं शिक्षा का 6.5 प्रतिशत पुस्तकालय पर रखा गया है।

ग्रन्थालय शब्द का तात्पर्य ''ग्रंथो का संकलन एवं भण्डार'' है लाइब्रेरी शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'लिबर' से बना है जिसका अर्थ ग्रंथ होता है ग्रन्थालय अपनी प्रारम्भिक अवस्था में मात्र ग्रंथ भण्डार ही माने जाते थे परन्तु इनका प्राचीन उद्देश्य एवं अर्थ वर्तमान युग के स्वरूप एवं उद्देश्य से बिल्कुल भिन्न है।

पुस्तकालय दो शब्दों से मिलकर बना है पुस्तक + आलय। मुद्रण कला के आविष्कार से पहले पुस्तकें हाथ से लिखी जाती थी उनको जहॉ पर एकत्र करके रखा जाता था उस घर या आलय को पुस्तकालय कहा जाता था। प्राचीन समय में पुस्तकाल संग्रहालय के रूप में थे वहां पर पुस्तकों की सुरक्षा और देखरेख तो की जाती थी किंतु वहां बैठकर उन पुस्तकों को पढ़ने या घर पर ले जाकर पढ़ने की सुविधा नहीं दी जाती थी। पुस्तकालय की आधुनिक परिभाषा एनसाईक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका नामक विश्वकोश में इस प्रकार दी गयी है– ''मुद्रित या लिखित सामग्री के उस संग्रह को पुस्तकालय कहते है जहां अध्ययन और अनुसंधान या सामान्य पठन–पाठन या दोनो उद्देश्यों को व्यवस्थित और संगठित किया गया हो''

तकनीकी शब्दों की व्याख्या

उच्च शिक्षण संस्थान से तात्पर्य राजस्थान के जयपुर, जोधपुर, अजमेर सम्भाग के स्नातक एवं स्नात्कोत्तर एवं शिक्षा महाविद्यालय।

ग्रन्थालय = ग्रन्थ + आलय

ग्रन्थ का अर्थ है पुस्तक और आलय का अर्थ है घर या स्थान अर्थात पुस्तकें रखने के घर या स्थान को ग्रन्थालय कहते हैं।

ग्रन्थालय सुविधाऍं

- **शैक्षिक सुविधाएं**– जैसे समुचित सामग्री की उपलब्धता, शिक्षण पत्रिका, समाचार पत्र, सन्दर्भ पुस्तकें।
- **भौतिक सुविधाऍं**– जैसे प्रकाश की व्यवस्था, पानी की व्यवस्था, फर्नीचर की व्यवस्था, किताबों के शैल्फ की व्यवस्था, इश्यु–रिटर्न की सुविधा आदि।
- **तकनीकी सुविधाएं**– कैटलॉग सिस्टम, फोटोस्टेट, फैक्स, कम्प्यूटर, इन्टरनेट की व्यवस्था।

* परिष्कार इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, जयपुर, राजस्थान।

अध्ययन के उद्देश्य–

- उच्च शिक्षण संस्थानों में उपलब्ध शैक्षिक सुविधाओं की जानकारी प्राप्त करना।
- उच्च शिक्षण संस्थानों में उपलब्ध भौतिक सुविधाओं की जानकारी प्राप्त करना।
- उच्च शिक्षण संस्थानों में उपलब्ध तकनीकी सुविधाओं की जानकारी प्राप्त करना।

परिकल्पनाएं

- जयपुर, अजमेर, और जोधपुर सम्भाग के महाविद्यालयों की शैक्षिक सुविधाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- जयपुर, अजमेर, और जोधपुर सम्भाग के महाविद्यालयों की भौतिक सुविधाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- जयपुर, अजमेर, और जोधपुर सम्भाग के महाविद्यालयों की तकनीकी सुविधाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

भारत और विदेशों में हुए अध्ययन डी.आर. कालिया सन् 2000, एस.डी व्यास सन् 2000, डी.एस. ठाकुर एवं के.एन. ठाकुर सन् 2000,, नवलानी तथा एम.एस. त्रिखा सन् 1999, तथा पाश्चात्य विद्वानो में झाओ लिउ तथा झेंग ये लानयाग सन् 2004, जी.शी. पैट्रीशिया, जे. होलाहन तथा एम.पीटरजुकर्ट सन् 2004, सेब्राइट, टेरेन्सफे पीएच.डी. फ्लोरिडा विश्वविद्यालय सन् 1994 के अध्ययन प्रस्तुत किए गए।

अध्ययन विधि– शोध अध्ययन हेतु शोध छात्रा द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श– न्यादर्श हेतु जयपुर, जोधपुर एवं अजमेर सम्भाग के 300 विद्यार्थियों तथा 80 पुस्तकालयाध्यक्षों का न्यादर्श लिया गया।

शोध उपकरण– प्रयोगकर्ताओं के अभिमत जानने हेतु 51 प्रश्नों की एक प्रश्नावली विद्यार्थियों के लिए एवं 26 प्रश्नो की एक प्रश्नावली पुस्तकालयाध्यक्ष हेतु बनायी गई।

सांख्यिकी– प्रस्तुत शोध में मध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण का प्रयोग किया गया ।

शोध परिणाम– जयपुर और अजमेर सम्भाग के महाविद्यालयों की शैक्षिक एवं तकनीकी सुविधाओं में अन्तर नहीं पाया गया जबकि भौतिक सुविधाओं के अन्तर्गत साधनों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों द्वारा अन्य पुस्तकालयों के प्रयोग के अध्ययन में अन्तर पाया गयाः–

- पुस्तकालयाध्क्षों को यह पता चला कि बन्द प्रणाली की तुलना में जहां मुक्त प्रणाली चल रही है वहां विद्यार्थी पुस्तकों को अधिक काम में लेते हैं अतः जिन महाविद्यालयों में बन्द प्रणाली पाई गयी है वहां मुक्त प्रणाली शुरू कर सकेंगें।
- पुस्तकों की अलमारी व्यवस्थित ढंग से रखी जाये जिससे प्रयोगकर्ता अधिक उपयोग कर सके।
- पुस्तकालय को समृद्ध एवं प्रभावी बनाने के लिए इण्टरनेट की सुविधा तथा व्यवस्थित कैटलॉग सिस्टम लागू कर सकेंगें।

सारणी–1 जयपुर और अजमेर सम्भाग के महाविद्यालयों में पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्य का अध्ययन

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी–मूल्य
1	जयपुर सम्भाग के महाविद्यालय	100	2.61	1.37	.05
2	अजमेर सम्भाग के महाविद्यालय	100	2.60	1.35	

d.f.(n-2) (200-2)=198 ***0.05 स्तर पर = 1.96**

सारणी–1 में जयपुर और अजमेर सम्भाग के महाविद्यालयों में पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्य अर्थात विद्यार्थी शिक्षण, शोध, परीक्षा जानकारी, हेतु पुस्तकालय का उपयोग करते हैं का अध्ययन किया गया है, जिसमे जयपुर सम्भाग के महाविद्यालयों का मध्यमान 2.61, मानक विचलन 1.37 एवं अजमेर सम्भाग के महाविद्यालयों

का मध्यमान 2.60, मानक विचलन 1.35 पाया गया। टी–मूल्य .05 जो कि सारणी मूल्य 1.96 से कम है। इस प्रकार दोनो के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सारणी–2 जयपुर और अजमेर सम्भाग के महाविद्यालयों में पाठ्य सामग्री की पर्याप्तता का अध्ययन

क्र.सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी–मूल्य
1	जयपुर सम्भाग के महाविद्यालय	100	1.54	.55	1.12
2	अजमेर सम्भाग के महाविद्यालय	100	1.45	.57	

d.f.(n-2) (200-2)=198 ***0.05 स्तर पर = 1.96**

सारणी–2 में जयपुर और अजमेर सम्भाग के महाविद्यालयों में पाठ्य सामग्री की पर्याप्तता जैसे किताबें, मासिक पत्रिका, शोध प्रतिवेदन, संक्षिप्त सारांश, अनुक्रमणिका, कॉन्फ्रेन्स लिट्रेचर आदि का अध्ययन किया गया है, जिसमे जयपुर सम्भाग के महाविद्यालयों का मध्यमान 1.54, मानक विचलन .55 एवं अजमेर सम्भाग के महाविद्यालयों का मध्यमान 1.45, मानक विचलन .57 पाया गया। टी–मूल्य 1.12 जो कि सारणी मूल्य 1.96 से कम है। इस प्रकार दोनो के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सारणी–3 जयपुर और जोधपुर सम्भाग के महाविद्यालय के पुस्तकालयों में उपलब्ध भौतिक सुविधाओं का अध्ययन

क्रं. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी–मूल्य
1	जयपुर सम्भाग के महाविद्यालय	100	7.90	1.10	.06
2	जेधपुर सम्भाग के महाविद्यालय	100	7.89	1.09	

d.f.(n-2) (200-2)=198 ***0.05 स्तर पर = 1.96**

सारणी–3 में जयपुर और जोधपुर सम्भाग के महाविद्यालयों में पुस्तकालयों में उपलब्ध भौतिक सुविधाओं जैसे प्रकाश, पानी फर्नीचर, हवा, वाचनालय आदि का अध्ययन किया गया है, जिसमे जयपुर सम्भाग के महाविद्यालयों का मध्यमान 7.90, मानक विचलन 1.10 एवं जोधपुर सम्भाग के महाविद्यालयों का मध्यमान 7.89, मानक विचलन 1.09 पाया गया। टी–मूल्य .06 जो कि सारणी मूल्य 1.96 से कम है। इस प्रकार दोनो के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सारणी–4 जोधपुर और अजमेर सम्भाग के महाविद्यालय की कम्प्यूटरीकृत सेवाओं का तुलनात्मक अध्ययन

क्रं. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी–मूल्य
1	जेधपुर सम्भाग के महाविद्यालय	100	1.06	1.00	.35
2	अजमेर सम्भाग के महाविद्यालय	100	1.01	1.01	

d.f.(n-2) (200-2)=198 ***0.05 स्तर पर = 1.96**

सारणी–4 में जोधपुर और अजमेर सम्भाग के महाविद्यालयों की कम्प्यूटरीकृत सेवाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जिसमे जोधपुर सम्भाग के महाविद्यालयों का मध्यमान 1.06, मानक विचलन 1.00 एवं अजमेर सम्भाग के महाविद्यालयों का मध्यमान 1.01, मानक विचलन 1.01 पाया गया। टी–मूल्य .35 आया जो कि सारणी मूल्य 1.96 से कम है। इस प्रकार दोनो के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सारणी–5 जयपुर और जोधपुर सम्भाग के महाविद्यालयों में इलेक्ट्रोनिक कम्युनिकेशन गजट्स को चलाने की जानकारी का अध्ययन

क्रं. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी–मूल्य
1	जयपुर सम्भाग के महाविद्यालय	100	1.53	.70	.21
2	जेधपुर सम्भाग के महाविद्यालय	100	1.55	.67	

d.f.(n-2) (200-2)=198 ***0.05 स्तर पर = 1.96**

सारणी–5 में जयपुर और जोधपुर सम्भाग के महाविद्यालयों में इलेक्ट्रोनिक कम्युनिकेशन गजट्स को चलाने की जानकारी का अध्ययन किया गया है, जिसमे जयपुर सम्भाग के महाविद्यालयों का मध्यमान 1.53, मानक विचलन .70 एवं जोधपुर सम्भाग के महाविद्यालयों का मध्यमान 1.55, मानक विचलन .67 पाया गया। टी–मूल्य .21 आया जो कि सारणी मूल्य 1.96 से कम है। इस प्रकार दोनो के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

शोध के प्रमुख निष्कर्ष

उच्च शिक्षण संस्थाओं में भौतिक सुविधान्तर्गत पुस्तकाल की निर्धारित स्थिति, प्रकाश, हवा, फर्नीचर आदि की सुविधाऍं तो उपलब्ध हैं परन्तु बैठने की व्यवस्था, सामग्री, व्यवस्थापन, सूचना सेवाऍं, वर्गीकरण, सूचीकरण एवं पठन सामग्री (सन्दर्भ सामग्री, पत्र–पत्रिकाऍं, प्रतिवेदन आदि) अद्यतन नहीं है। इन्ही महाविद्यालयी पुस्तकालयों में तकनीकी सेवाओं– कम्प्यूटर, छायाप्रति, रेप्रोग्राफी, अनुवाद, अन्तरपुस्तकालय आदान प्रदान, लैंडिंग, इण्टरनेट, सी.ए.एस. एवं एस.डी.आई. सम्बन्धी सेवाऍं अति न्यूनतम हैं।

शोध की परिसीमाएँ

- प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में जयपुर, जोधपुर, अजमेर सम्भाग के राजकीय एवं निजी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शिक्षा महाविद्यालयों को ही लिया गया है।
- उच्च शिक्षण संस्थाओं के अन्तर्गत तकनीकी (मेडिकल एवं इंजीनियरिंग) उच्च शिक्षण संस्थाओं को नहीं लिया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन दैव निदर्शन तथ सोद्देश्य विधि से किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- Bhatnagar R.P. and Bhatnagar M. (1992) Manovigyan aur Shiksha mai Mapan aur Mulyankan, R. Lal book depot] Meeruth.
- Granthalaya Vigyan] June-December 1976 vol.3 No.7
- Gupta Vijaya: Children Leterature and Reading habit, New Delhi' Deep and Deep, 1997
- Granthalaya Vgyan, June 1977 Vol.8 No.1
- Prof. S.S. Agarwal- Granthalaya Prabandhan ke Mool Tatva.
- Agarwal J.C. Education Research, Aya Book Depot, New Delhi.
- Bhaskar Nath Tiwari- Prod Shiksha Aur Pustkalaya.

♦❐♦